श्री योगेश्वरी शिक्षण संस्था

शताब्दी वर्ष के लपलक्ष्य में

हिंदी विभाग, स्वामी रामानंद तीर्थ महाविद्यालय, अंबाजोगाई

तथा

महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

लोकसाहित्य

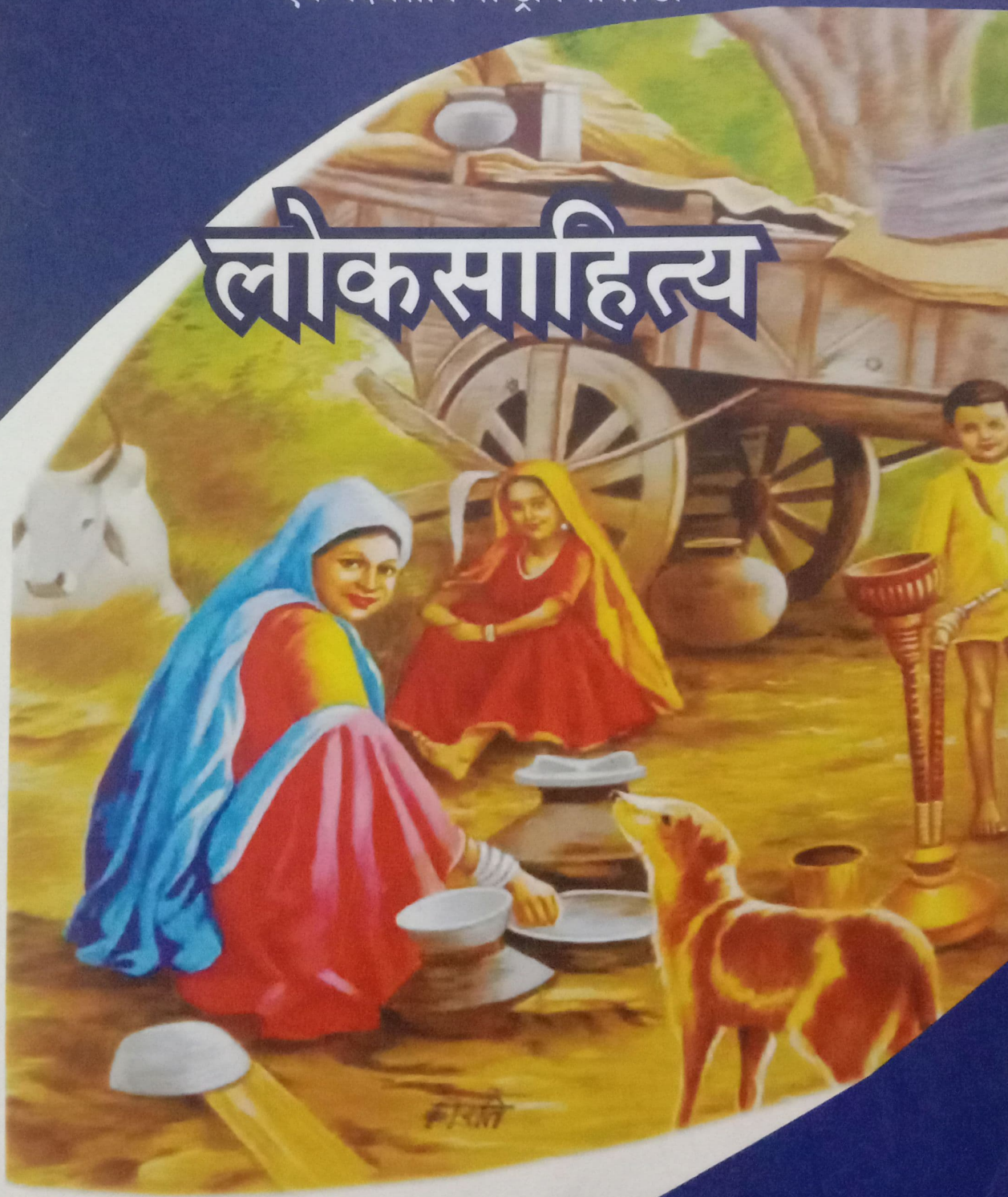

संपादक

डॉ. गणपत राठोड

सह संपादक

डॉ. राम बडे

लोकसाहित्य

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth
Dist. Parbhani

संपादक
डॉ. गणपत राठोड

सहसंपादक
डॉ. राम बडे

शौर्य पब्लिकेशन, लातूर

ISBN 978-93-83672-48-6

- लोकसाहित्य
- संपादक :- डॉ. गणपत राठोड

  सहसंपादक :- डॉ. राम बडे

  मार्गदर्शक :- डॉ. सुरेश खुरसाले

  प्राचार्य डॉ. प्रविण भोसले

© प्राचार्य

स्वामी रामानंद तीर्थ महाविद्यालय, अंबाजोगाई ,जि. बीड

- प्रकाशक

  शौर्य पब्लिकेशन

  कपिल नगर, लातूर, जि. लातूर- 413531.

  मो.नं. 8149668999, 8483959442

- शब्द सज्जा

  श्री. गोदाम अरुण

  8149668999, 8483959442

- मुखपृष्ठ

  श्री. गोदाम अरुण

  8149668999, 8483959442

- मुद्रक

  आर.आर. प्रिंटर्स , एम.आय.डी.सी. लातूर - 413512

- प्रथम संस्करण

  मार्च 2017

- मुल्य - 250 /-

नोट :- प्रकाशित रचनाओं के विचार से स्म्पादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नही |

30 उत्तराखंड के लोकगीतों में अभिव्यक्त लोक जीवन | डॉ. सुचिता गायकवाड | 225
31 लोकगीत और समाज | प्रा.डॉ.कुलकर्णी व्हि.बी | 230
32 ब्रज लोकगीतों में स्वाधीनता आंदोलन के स्वर | प्रेम कुमार | 233
33 हिन्दी लोकगीत और समाज | डॉ. ओमप्रकाश ब. झंवर | 237
34 रामदरश मिश्र के उपन्यासों में लोकगीत एवं लोकख्यान | प्रा.आत्तार एम.एच. | 240

खंड 'क' लोकसाहित्य के विविध रूप

1 आदिवासी लोकगीतों में व्यक्त सामाजिक कुरीतियों के प्रति आक्रोश | डॉ. सुधीर गणेशराव वाघ | 245
2 लोककसाहित्य के विविध रुप अहिरणी के विशेष संदर्भ में | डॉ. बळीराम राख | 249
3 लोकसाहित्य के विविध रूप | डॉ.जयंत डी. बोबडे | 254
4 लोक साहित्य के विविध रूप | साळुंके शिवहार भुजंगराव | 259
5 लोकसाहित्य की प्रमुख विधा 'कहावत' | डॉ. सुजितसिंह शि. परिहार | 263
6 लोकसाहित्य के विविध रुप | प्रा. डॉ. जाधव के. के. | 266
7 लोकसाहित्य मे स्त्रियों संबंधित 'लोकोक्तियाँ' | प्रा.व्ही.बी.खाडे (दळवे) | 270
8 लोकसाहित्य के विविध रूप लोकसाहित्य में भक्ति और प्रेम | प्रा.डॉ.वीरश्री वशिष्ठजी आर्य | 273
9 आदिवासी साहित्य में व्यक्त विद्रोह के स्वर | प्रा.डॉ. रणजीत जाधव | 276
10 आदिवासी लोक - जीवन | प्रा.डॉ. रेविता ब. कावळे | 280
11 लोकसाहित्य के विविध रुप : एक मूल्यांकन | आयु. सुजाता हजारे / धन्वे | 283
12 "बंजारा समुदाय की महिलाओं का लोकगीतो के व्दारा सांस्कृतीकता जतन" में योगदान का समाजशास्त्रीय अध्ययन | डॉ. दशरथ जाधव | 287
13 लोकसाहित्य के विविध रूप | आमनर कुशावती बालासाहेब | 292
14 हिन्दी लोक साहित्य में लोक जीवन का चित्रण : हबीब तन्वीर रचित नाटक 'आगरा बाज़ार' के विशेष सन्दर्भ में | डॉ. वि. वि. वायचळ 'वेदार्य' | 295
15 "लोकसाहित्य और समाज" | शिला महादू घुले | 298
16 लोकसाहित्य और फणीश्वर नाथ रेणु की कहानियाँ | प्रा.प्रकाश बन्सीधर खुळे | 300
17 लोकसाहित्य के परिप्रेक्ष्य में दलित साहित्य का चित्रण | प्रा.वाघमारे के.एच | 303
18 छठे दशक के हिन्दी उपन्यासों में लोककथाओं की भावभिव्यक्ति | डॉ. पी. बी. देशमाने | 305

Ramesh Warpudkar (ACS) College, Dist. Parbhani

लोक साहित्य लोकजीवन के समुदाय की अभिव्यक्ति है। लोकसाहित्य लोक संस्कृति का दर्पण है। भारतीय संस्कृति की आत्मा लोक संस्कृति में ही सुरक्षित है। इससे ही सजीव एवं यथार्थ चित्रण लोकसाहित्य में मिलता है लोकसाहित्य में संपूर्ण रुप से समाज-समुदाय की अभिव्यक्ति तो होती है किंतू उसका रुप मौखिक होता है । समाज की आवश्यकताओं के अनुसार समय-समय पर उसमें परिवर्तन भी होता हे । लोकसाहित्य की परंपराएँ मिटती नहीं गत्यात्मक होती है, किसी अध्ययन या अभ्यास की आवश्यकता नहीं होती । समाज विकास के इतिहास की अमूल्य निधी लोकसाहित्य में सुरक्षित रहती है । लोक के आचार-विचार संस्कार आदि के बीज इसमें ही है।

मानव समाज जितना पुराना है उतनी ही लोकसाहित्य की परंपरा भी । मुल रुप में यह मौखिक परंपरा रही है । जिस प्रकार लिखित या लिपिबद्ध रुप में शिष्ट साहित्य की परंपरा रही है वैसे लोकसाहित्य की नही । फिर भी भारत में लोकसाहित्य की परंपरा अत्यंत प्राचीन मानी जाती है। आदिम आशिक्षित एवं शिक्षित जन-समूह विशेष के भावों की अभिव्यक्ति अलिखित, मौखिम समूह निर्मित परंपरागत, सामूहिक होती है । व्यापक रुप में इसमें सभी परंपराएँ, कला, सामाजिक, धार्मिक विश्वास, कला-कौशल, रुढियाँ इन सबका अंतर्भाव होता है । आर्थात आदिम मानव समाज द्वारा निर्मित यह मौखिक अभिव्यक्ति ही लोकसाहित्य है । लोकसाहित्य लोकसमूह द्वारा स्विकृत व्यक्ती की परंपरागत मौखिक क्रम से प्राप्त वह वाणी कथन है जिसमें लोक मानस संग्रहित होता है। लोकसाहित्य का रचनाकार अज्ञात होता है। एक तरह से वह लोकमानस की कृति होता है। लोककलाकार पढ़ा लिखा नहीं पर उसके द्वारा निर्मित साहित्य अत्यंत उच्च कोटि का है।

लोकसाहित्य निर्मिति की प्रेरणा धर्म में भी ढूँढी जा सकती हे । मानव जीवन के आल्हाद के क्षण सामुहिक उत्सव की उल्लासमयी प्रवृति, जन-मनोरंजन आदि बातें लोकसाहित्य के निर्मिति के लिए प्रेरक रही है। असल में संपुर्ण मानव जीवन ही लोकसाहित्य की निर्मिति की प्रेरणा है । व्याकरणिक नियमों की जटिलता तथा रचना विशेष की पद्धति से मुक्त, लोकभाषा का वह सहज स्फूर्त स्वरुप है। अर्थात लोकसाहित्य मौखिक होता है, वह पारंपारिक होते हुए भी परिवर्तनशील होता है।

लोकसाहित्य व्यापक रुप में अपनी विभिन्न विधाओं के साथ अमूर्त-मूर्त रुप में

आज हमारे सामने है। सागर के समान अमर्यादित गहराई में छिपे हुए इस साहित्य के रचनाकार का नाम भी अज्ञात रहा है। लोक समाज में वर्ग संप्रदाय के प्रति समभावना दिखाई देती है। गाँव-गाँव में रहने वाला सारा समाज एकता की भावना से प्रेरित था। लोकसाहित्य धार्मिक नही हैं, न उसमें उपदेश देने की प्रवृत्ति है। लोग स्नेह, प्रेम से रहते थे। सबके मन में लोकहित की भावना सभी के कल्याण का भाव रहता है। इसलिए आज लोक मानस में बसा हुआ है।

लोकसाहित्य एक ऐसा प्रवाह है जिसमें अनगिनत धाराएँ आकर मिली है। इस धारा एक महत्वपुर्ण अंग है लोकगीत । गुण विशेषता की दृष्टि से लोकगीतों का महत्व रहा है। इसका निर्माण आम जनता के बीच में हुआ है। जन मानस का यह कंठहार है। इसलिए लोकगीत को जन-जन- का जन-मन का साहित्य कहा जाता है।

"महात्मा गांधी ने लोक गीतों को 'समुची संस्कृति का पहरेदार' लाल लाजपजराय ने हमारे विकास के इतिहास की अमुल्य निधी, " कुंज बिहारीलाल ने 'बुध्दि ज्ञान, धर्म और दर्शन का शास्त्र' एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका ने 'मनुष्य की उत्पत्ति विकास और रीति-रिवाजों की विधा' वासुदेव शरण अग्रवाल ने 'संस्कृति का अग्नित भंडार', डॉ सत्येन्द्र ने 'आदिम मानव की आदिम प्रवृत्तियों का कोष' कहा है।

"लोक गीत में गुंजित निधियाँ
संस्कृति की थाती है
युगों युगों से आज भी
जन-मन को हर्षाती है।"

late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth • Dist. Parbhani

लोक के द्वारा लोक के लिए लिखे गए गीत ही 'लोकगीत' है। लोक साहित्य लोक वाड्.मय की विशिष्ट विरासत हैं। इससे सामाजिक संविधान और रिति-रिवाजो की रुप रेखा का स्पष्टीकरण होता है। समाज का आंतरिक विधान जिन तिलियों पर बना है, उसकी मैलिक व्याख्या लोकसाहित्य के पास ही है । इसके द्वारा विविध अभ्यताओं, संस्कृतियों और समाज निर्माण के धरातलों का निर्णय हो सकता है। लोकसाहित्य की अन्य विधाओं, लोककथा, लोकगाथा, लोक-नाट्य, कहाँवते, मुहाँवरे, पहैलियों, पडों सलोकों आदि में से सार्वाधिक लोकप्रियता का वरदान लोकगीतों को मिला है।

जीवन के आरंभ से प्रौढावस्था तक आते-आते मनुष्य के पास संसार के अनुभवों का खजाना बन जाता है। इसी खजाने से नित्य नए लोकगीतों की निर्मिति होती है। सोलह

संस्कारों में से जन्म, विवाह, उपनयन और मृत्यु के अवसर पर लोक गीत गाने की परंपरा है। लोकगीतों को विषय की दृष्टि से संस्कार, त्यौहार, पर्व, देवी-देवता, लोक देवी, देव, ऋतु बालक-बालिकाओं, मनोरंजन, व्यवसाय, श्रम, जाति विविध गीतों में वर्गीकृम किया जाता है। इस लोकगीतों में काव्य के सभी रसों की निष्पत्ति हुई है। इनमें तलवार की टंकार पायल की झंकार दोनों सुनी जा सकती है।

पुत्रजन्म हिन्दु परिवारों में एक विशेष प्रसन्नता का अवसर माना जाता है। पुत्र जन्म की वार्ता सुनते ही बधाई सुचक शहनाई, पीतल या कासे की थाली बजाई जाती है । वार्ता सुनाने वाले को भी बधाई या उपहार के रुप में कीमती चीजें या रुपये दिए जाते हैं। बडे ही उत्साह से गरीबों में दान धर्म के रुप में मिठाइयाँ बाटी जाती है। घर परिवार के सभी सदस्य खुशी से झुम उठते हैं। बच्चे की माँ प्रसन्न होकर मन ही मन भगवान का लाख-लाख शुकर मानती है । जैसे -

"चंदा जैसी चांदनी गुलाब जैसा फूल ।
सूरज जैसा किरण, मोहे राम दियो ललन।।"

घर-आँगन में स्त्रियाँ मंगलगीत गाते हुए नाचती है - जैसे - "जिस दिन लाल तेरा जनम हुआ है, हुई है स्वर्ण की रात".....

लोरी गोतों के लगभग सर्वत्र समान होते हैं - माँ की ममता, स्नेह बच्चे का नटखटपन, उसकी शरारतें, उसकी क्रीडाएँ, उसका सौंदर्य आदि बातों का वर्णन किया जाता है। प्राकृतिक चीजों की सहायता से भावाभिव्यक्ति की जाती है । उदा- चंदा मामा, नींद रानी, नदियाँ-पवन तारे - फूल-पेड उसी प्रकार राजा- रानी, राजकुमार-राजकुमारी, सेनापति आदि इन गीतों के पात्र होते हैं ।

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani